बागवान भी बैठा है। माली भी है। फूल भी है। यह नई बात है ना। कोई नया अगर सुनेंगे तो कहेंगे कि यह क्या कहते हैं। बागवान फूल आदि सब क्या है?ऐसी बातें तो कब शास्त्रों में सुनी नहीं। तुम बच्चे जानते हो कि याद भी करते हैं तो खिवैया बागवान को। अब यहां आये हैं यहां से पार ले जाने। बाप कहते हैं कि याद की यात्रा पर रहना है। अपने को आप ही देखो हम कितनी दूर जा रहे हैं। कितना अभी सतोप्रधान अवस्था तक पहुंचना है। जितनी2 सतोप्रधान अवस्था होती जावेगी समझेंगे कि हम लौट रहे हैं। कहां तक हम पहुंचे हैं। सारा मदार याद की यात्रा पर है। खुशी भी चढ़ी रहेगी। जितनी2 जो मेहनत करते हैं उतनी ही उनमें खुशी आवेगी। जैसे स्कूल में परीक्षा के दिन होते हैं तो सब स्टुडेंट्स समझ जाते हैं कि हम कहां तक आगे बढ़े हैं। यहां भी ऐसे हैं। हर एक बच्चा अपने को जानता है कि हम कहां तक खुशबूदार बच्चा हूँ। कितना खूशबूदार औरों को बनाता हूँ ;क्योंकि इस समय सभी बदबूदार काँटे हैं। यहां गाया ही जाता है काँटों का जंगल। वो है फूलों का बगीचा। मुसलमान लोग. . . कहते हैं गार्डन ऑफ अल्लाह। समझते हैं कि वहां एक बगीचा है। वहां जो जाता है उनको खुदा फूल देता है। मन में जो कामना होती है वो पूर्ण करता है। बाकी ऐसे तो नहीं है कि कोई फूल उठाकर देंगे। जैसा जिनकी बुद्धि में है वो सा. होता है। यहां सा. पर कुछ भी मदार नहीं है। भक्तिमार्ग में तो सा. के लिए गला भी काट देते हैं। मीरा को सा. हुआ उनका कितना नाम है। वो भक्ति माल है अर्थात् दुर्गति माल। जो महान भक्त हैं वो हैं दुर्गति को पाये हुये। बाप भी समझाते हैं कि यह बहुत उँचा था। अब बिल्कुल नीच है। भक्तिमार्ग में ऐसे नहीं कहेंगे। भक्ति तो है ही दुर्गति मार्ग। भक्ति को तो आधा कल्प चलना ही है। ज्ञान है ही नहीं। है ही भक्ति दुर्गति का राज्य। तो उसको रांग कैसे समझें?वेदों आदि को बहुत मान है। कहते हैं वेद तो हमारे प्राण हैं। अब तुम जानते हो कि वो वेद–शास्त्र सब झूठे हैं। यह है ही भक्तिमार्ग के लिए। भक्ति का कितना बड़ा झाड़ है। ज्ञान का अर्थ तुम जानते हो कि ज्ञान है बींज। भक्ति में कितनी मेहनत है। कितने मेले आदि लगते हैं। भक्तिमार्ग से तो मैले ही होते जाते हैं। अब ज्ञान से तुम कितने शुद्ध होते हैं। खुशबूदार बनते हो। यह तुम्हारा बगीचा है। काँटा किसको नहीं कहेंगे। अगर विकार में कोई नहीं जाते होंगे तो कहेंगे कि इस बगीचे में एक भी काँटा नहीं है। काँटे हैं कलियुग में। अब यह पुरुखुशबूदारोत्तम संगमयुग है। इसमें काँटा कहाँ से आया?अगर कोई कहाँ से बैठा है तो अपने को ही नुकसान पहुँचाता है ;क्योंकि यह इंद्र सभा है ना। इसमें सब ज्ञान परियाँ बैठी हैं। ज्ञान डांस करने वाली परियां। मुख्य2 के ना– पुखराज परी, नीलम परी आदि2 पड़े हैं। वो ही नवरत्न गाये जाते हैं ;परंतु यह कौन थे किनको भी पता नहीं है। भक्तिमार्ग में तो बहुत कुछ चलता है। यहां तो कुछ भी नहीं। बाप सिर्फ कहते हैं कि मुझे याद करो। तुम बच्चों की बुद्धि में अभी समझ है। 84का चक्र भी अब बुद्धि में है। शास्त्रों में तो 84लाख कह देते हैं। मीठे2 सिकीलधे बच्चों को तो बाप ने समझाया है कि तुमने ही 84जन्म लिये हैं। शास्त्रों में तो 84लाख कह देते हैं। अभी तुम सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हो फिर सतोप्रधान बनना है। कितना सहज है। भगवानोवाच्य बच्चों प्रति। मामेकम् याद करो। गीता पढ़ने से यह समझ नहीं आवेगा कि परमात्मा आत्माओं से बात करते हैं। कोई की भी बुद्धि में नहीं होगा। गीता वालों के पास जाओ तो उनकी बुद्धि में कुछ है नहीं। सिर्फ संस्कृत में किताब है वो याद कर लेते हैं। यह भी एक धंधा हो जाता है। कोई एक बच्चे को कंठ करवाकर सिखा लेते हैं। गीता और उनका अर्थ थोड़ा कंठ करवा लेते हैं। फिर ढेर के ढेर लोग उनके पास आते हैं। इसको कहा जाता है कनरस। भक्तिमार्ग में तो है ही कनरस। यहां पर कनरस की कोई बात नहीं। सिर्फ हे आत्मायें बाप को याद करो। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों। सब मीठे2 फूल ही आते हैं। काँटा कोई नहीं। हां, माया के तूफान तो आवेंगे। माया ऐसी. . . . है जो झट फंसा देती है। फिर पछतावेंगे कि हमने यह क्या

किया। हमारी तो की कराई सारी कमाई चट हो गई। यह है बगीचा। बगीचे में अच्छे2 फूल भी होते हैं। इस बगीचे में भी कोई तो बहुत फर्स्टक्लास फूल होते जाते हैं। जैसे मुगल गार्डन में अच्छे2 फूल हैं। सब जाते हैं उनको देखने। यहां तुम्हारे पास तुमको कोई देखने तो आवेंगे नहीं। तुम कांटों को क्या मुंह दिखावेंगे। वो तो छी2 हैं ना। गायन भी है मूत पलीती–––––बाबा को जपसाहिब सुखमणी आदि सब याद थीं। अखंड पाठ भी करते थे। रहते ही मन्दिर में थे। मन्दिर की चार्ज सारी हमारे पर थी। तुम अभी समझते हो कि मूत–पलीती कपड़ धोये का अर्थ क्या है। महिमा सारी बाप ही की है। मेढकों मुआफिक सिर्फ बोलते हैं। अर्थ कुछ नहीं समझते। जैसे गाते हैं पतित–पावन सीता–राम–––––––और बोलो कि तुम पतित हो तो गुस्सा लग जावेगा। अभी तुम बच्चों को बाप बैठ समझाते हैं। बच्चों को कहते भी हैं कि अच्छे2 फूल लाओ। जो अच्छे2 फूल लावेंगे वो ही अच्छा फूल माना जावेगा। सब कहते हैं हम तो श्रीलक्ष्मी नारायण बनेंगे। तो माना कि सब गुलाब के फूल हो गये ना। एम ऑब्जेक्ट ही यह है ना। गोया सब सदा गुलाब होंगे। ऐसा सिद्ध होता है। बाप कहते अच्छा तुम बच्चों के मुख में गुलाब। सब पुरुशार्थ कर सदा गुलाब बनो। स्वर्ग में जाने लायक जरूर बनना है। ढेर के ढेर बच्चे हैं। प्रजा तो बहुत बन रही है। वहां है ही राजा और रानी। सतयुग में तो (वजीर) होते नहीं ;क्योंकि राजा में ही फुल पार्ट रहता है। वजीर आदि से राय आदि लेने की दरकार नहीं रहती है। नहीं तो राय लेने वाला बड़ा हो जावे। वजीर रखते ही हैं राय देने के लिए। वहां तो राय की दरकार नहीं। भगवान–भगवती को राय की दरकार नहीं। वजीर आदि तब होते हैं जब पतित होते हैं। भारत की ही बात है। और कोई खंड नहीं जहां राजाओं को राजा माथा टेकते हैं। यहां ही दिखाया जाता है ज्ञान मार्ग में पूज्य। अज्ञान अथवा भक्ति में पुजारी। वो डबल सिरताज। वो सिंगल ताज। बाप कहते हैं कि भारत जैसा पवित्र खंड कोई है नहीं। सब कहते हैं कि पैराडाइज बहिश्त था। तुम इसके लिए ही पढ़ते हो। अभी तुमको फूल बनना है। बागवान आया है। माली भी है। माली भी नम्बरवार होते हैं। गवर्मेंट हाउस के माली की जरूर जास्ती तनख्वाह होगी। यहां भी नम्बरवार हैं। कोई अच्छे2 माली हैं। बच्चे भी समझते हैं कि यह बगीचा है। कांटे नहीं। कांटे दुःख देते हैं। बाप तो किनको कब दुःख नहीं देते। वो है ही दुःखहर्ता, सुखकर्ता। कितना मीठा बाबा है। तुम बच्चों को बाप पर लव है। बाप भी बच्चों को लव करते हैं ना। यह पढ़ाई है। बाप कहते हैं मैं प्रैक्टिकल में तुमको समझाता हूँ। यह भी पढ़ते हैं। पढ़कर औरों को भी पढ़ाओ तो कांटा से फूल बनो। और भी बनें। भारत ही महादानी गाया हुआ है। अभी तुम कितने महादानी बनते हो। अविनाशी ज्ञान रत्नों का तुम दान करते हो। बाबा ने समझाया है कि आत्मा ही रूप–बसंत है। बाप भी रूप–बसंत है। इनमें सारा ज्ञान है। ज्ञान का सागर है परमपिता परमात्मा। वो अथॉरिटी है ना। मनुय तो कुछ भी नहीं जानते। ज्ञान का सागर एक बाप ही गाया जाता है। इसलिए ही गाया जाता है कि सारे समुन्द्र की स्याही बनाओ, जंगल की कलम बनाओ तो भी कम होने वाला नहीं है। और फिर एक सेकेंड में जीवनमुक्ति का भी गायन है। तुम्हारे पास कोई शांति आदि नहीं है। वहां कोई भी पंडित आदि पास जावेंगे तो समझेंगे कि यह पंडित बहुत पढ़ा हुआ है। अथॉरिटी है। इनको सब वेद–शास्त्र कंठ किया हुआ है। फिर संस्कार ले जाते हैं तो छोटेपन में ही फिर वो ही अध्ययन करते हैं। तुम संस्कार न ले जाते हो। तुम पढ़ाई की रिजल्ट ले जाते हो। तुम्हारी पढ़ाई पूरी होगी फिर रिजल्ट निकलेगी फिर वो ही पद पा लेंगे। ज्ञान थोड़े ही ले जावेंगे जो कि किसी को सुनावें। वो संस्कार ले जाते हैं तो छोटेपन में ही विद्वान आदि बन जाते हैं। यहां तो तुम्हारी पढ़ाई है। जिनकी प्रारब्ध नई दुनियां में मिलनी है। तुम बच्चों को बाप ने समझाया है कि माया भी कोई कम शक्तिवान नहीं है। माया को शक्ति है दुर्गति में ले जाने की ; परंतु उसकी महिमा थोड़े ही करेंगे कि वो सर्वशक्तिवान है। वो तो देखो ना दुःख देने में शक्तिवान

है ना। बाप सुख देने में सर्वशक्तिवान है। इसलिए ही उनका गायन है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। तुम सुख उठाते तो दुःख भी जरूर उठाना ही है। हार और जीत किनकी है उसका भी पता होना चाहिए ना। बाप भी भारत में आते हैं। जयंति भी भारत में ही मनाई जाती है। यह किसको भी पता नहीं है कि शिवबाबा कब आया। क्या आकर किया था। नामनिशान ही गुम कर दिया है। कृण बच्चे का नाम दे दिया है। वास्तव में बिलवेड बाप की महिमा अलग, कृष्ण की महिमा अलग है।वो निराकार है। वो साकार है। कृष्ण की महिमा है सर्वगुणसम्पन्न––––––––––––––––शिवबाबा की सर्वगुण सम्पन्न यह महिमा नहीं करेंगे। जिसमें गुण है वो तो फिर अवगुणी भी होगा। इसलिए बाप की महिमा बिल्कुल ही अलग है। कृष्ण है साकार। उनको निराकार थोड़े ही कहेंगे। यों तो बच्चे समझते हैं कि हम आत्मायें भी निराकार हैं। अकालमूर्त। बाप को अकालमूर्त कहते हैं ना। हम भी अकालमूर्त हैं। आत्मा को काल खा ही नहीं सकती। अकालमूर्त का (आत्मा का)यह तख्त है। हमारा बाप भी अकालमूर्त है। काल शरीर को ही खाता है। आत्मा को नहीं खा सकता। यहां अकालमूर्त को बुलाते हैं। वहां नहीं बुलावेंगे ;क्योंकि वहां पर तो सुख ही सुख है। इसलिए ही गाते भी हैं कि दुःख में सिमरण सब करे दुःख में करे ना कोय। अब तुम बच्चे जानते हो कि रावणराज्य में कितना दुःख है। बाप तो स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। फिर वहां आधा कल्प कोई पुकारेंगे ही नहीं। जैसे लौकिक बाप बच्चों को श्रृंगार कर फिर वानप्रस्थ लेते हैं। फिर सब कुछ बच्चों को देकर कहेंगे कि अभी हम सतसंग में जाते हैं। कुछ खाने–पीने के लिए भेजते रहना है। यह बाप तो ऐसे नहीं कहेंगे ना। यह तो कहते हैं मीठे2 बच्चों हम तुमको विश्व की बादशाही देकर वानप्रस्थ में चले जावेंगे। हम थोड़े ही कहेंगे कि खाने के लिए भेजना। लौकिक बच्चों को तो फर्ज है बाप की सम्भाल करना। नहीं तो खावेंगे कैसे?यह बाप तो कहते हैं कि मैं तो निष्काम सेवाधारी हूँ। मनुष्य कोई निष्काम हो नहीं सकता। भूखा मर जावे। हम थोड़े ही भूख मरेंगे। हम तो अभोक्ता हैं। हम तुमको विश्व की बादशाही देकर फिर जाकर विश्राम लेंगे। फिर हमारा पार्ट बंद हो जाता है। फिर भक्ति मार्ग में शुरू होता है। यह अनादि ड्रामा बना हुआ है जो बाप ही बैठ समझाते हैं। वास्तव में तुम्हारा पार्ट सबसे जास्ती है तो जो आफरीन भी तुमको मिलनी चाहिए। मैं आराम करता हूँ तब तुम ब्रह्माण्ड के भी विश्व के भी मालिक बनते हो। तुम्हारा बड़ा नाम होता है। इस ड्रामा का राज भी तुम जानते हो। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन। यह ड्रामा कैसे चक्र लगाता है यह तुमको पता है। तुम हो ज्ञान के (फूल)। दुनियां में एक भी नहीं। रात–दिन का फर्क है। वो रात में है। तुम दिन में जाते हो। आजकल तो देखा वनउत्सव करते रहते हैं। भगवान तो मनुष्यों को मनोत्सव कर रहे हैं। वो फिर कांटे लगाते रहते हैं हर वर्ष। अभी तुम पढ़ रहे हो। तुम बुलाते भी हो कि हे पतित–पावन आओ। अब बाप कहते हैं कि याद करो तो खाद निकल जावे। तुम बच्चों को तो कितनी खुशी होनी चाहिए। तुम जानते हो कि हम फूल बन रहे हैं। हम कितनों का कल्याण करते हैं। यह भी व्यापार है। कोई विरला व्यापारी यह व्यापार करे। बाबा को सौदागर जादूगर भी कहते हैं। कमाल करते हैं। जो मनुष्य को देवता राव को रंक बना देते हैं। अभी बेहद के बाप से तुम सौदा लेने आये हो। हमको रंक से राव बनाओ। यह तो बहुत अच्छा ग्राहक है। इनको तो तुम कहते भी हो दुःखहर्ता, सुखकर्ता। इन जैसा दाता कोई होता है?नहीं। वो है ही सुख देने वाला। बाप कहते हैं कि भक्तिमार्ग में भी मैं तुमको देता हूँ। यह ड्रामा में नूंध है। नाम सिर्फ मेरा गाया जाता है। बाप समझाते हैं कि मेरा पार्ट भक्ति मार्ग में भी नूंधा हुआ है। कोई हनुमान की भक्ति करेंगे तो हनुमान का सा. होगा। गणेश के भक्त को उनका सा. होता है। तो वो समझते हैं कि (सब)में परमात्मा ही परमात्मा है। परमात्मा सर्वव्यापी है। अब बाप बैठ समझाते हैं कि मैं क्या2 करता हूँ। आगे चलकर समझते रहेंगे। जैसे पहले भी समझा था। अच्छा, बच्चों को वालेकमसलाम।